शिक्षा क्षेत्र की चिंताएं दूर करने की जरूरत

नई दिल्ली : केंद्रीय विद्यालय संगठन के स्वर्ण जयंती समारोह में नया 'लोगो' जारी करते प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह। साथ में मानव संसाधन विकास मंत्री एमएम पल्लम राजू और राज्यमंत्री शशि थरूर।

नई दिल्ली (एसएनबी)। शिक्षकों का मानक स्तरीय नहीं होने और शिक्षण नतीजों के उम्मीदों पर खरा नहीं उतरने पर अफसोस जताते हुए प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र की प्रमुख चिंताओं को दूर किए जाने की जरूरत है। उन्होंने इस बात पर चिंता जाहिर की कि बच्चों में प्राइमरी स्कूल के बाद शिक्षा छोड़ने की दर काफी अधिक है। समग्रता से जुड़ी कुछ प्रमुख चिंताओं को भी दूर करने की जरूरत है। प्रधानमंत्री ने एक दिन पहले भी इस बात पर अफसोस जताया था कि विश्व के शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों में एक भी भारतीय संस्थान नहीं है।

बुधवार को केंद्रीय विद्यालय संगठन के स्वर्ण जयंती समारोह के उद्घाटन कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार ने हमेशा यह पहचान की है कि अगर अपने नागरिकों की पहुंच बेहतर गुणवत्ता वाली शिक्षा तक हो तो भारत एक आधुनिक, खुशहाल और प्रगतिशील राष्ट्र के रूप में उभर कर सामने आ सकता है। उन्होंने कहा कि हम जानते हैं कि हमारा देश युवा देश है और हम अपनी आबादी का लाभ तभी उठा सकते हैं, जब हमारे पास शिक्षा और दक्ष श्रमशक्ति हो। इससे अर्थव्यवस्था के विस्तार में मदद मिलेगी और यह अधिक उत्पादक हो सकेगी।

▶ प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने शिक्षकों का मानक स्तरीय नहीं होने, शिक्षण नतीजों के उम्मीदों पर खरा नहीं उतरने पर जताया अफसोस

▶ केवीएस के स्वर्ण जयंती समारोह में प्राइमरी स्कूल के बाद पढ़ाई छोड़ने की अधिक दर पर भी चिंता जाहिर की

प्रधानमंत्री ने कहा कि केंद्रीय विद्यालय अपने आसपास स्थित स्कूलों के मानक तय करने में काफी मदद दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि 12वीं योजना में ऐसी परिकल्पना की गई है कि वे पड़ोस के स्कूलों के लिए आदर्श के रूप में काम कर सकें। उन्होंने इन उम्मीदों को पूरा करने के लिए केवीएस से भी तौर-तरीके [illegible]

सिंह ने कहा कि 20 रेजिमेंटल स्कूलों के साथ 1963 में केंद्रीय विद्यालय की शुरुआत की गई थी। अब देश भर में करीब 1100 केंद्रीय विद्यालय हैं। केंद्रीय विद्यालय करीब 11 लाख बच्चों को शिक्षा दे रहे हैं। इसमें 46 हजार से ज्यादा लोग कार्यरत हैं। उन्होंने इस बात पर खुशी जताई कि केंद्रीय विद्यालयों में छात्राओं का हिस्सा 43 प्रतिशत है और महिला शिक्षकों का अनुपात है। उन्होंने कहा कि देश के विभिन्न हिस्सों में अतिरिक्त केंद्रीय विद्यालयों की भारी मांग है। यह संकेतक है कि केवीएस व्यवस्था ने शिक्षा का उच्च स्तर कायम रखा है। केवीएस ने बदलते दौर के साथ तालमेल बिठाए रखने के लिए कई कदम उठाए हैं। इनमें शिक्षा प्रदान करने में [illegible] का इस्तेमाल आदि शामिल है।